International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 12-14

'तमस': वह अंधेरा जो रह–रह कर लौट आता है

डॉ0 अमिता
प्राध्यापक, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

भीष्म साहनी कृत 'तमस' उपन्यास सन् 1973 में प्रकाशित एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। लेखक ने यहाँ सशक्त रूप में देश के विभाजन से पूर्व की हमारी सामाजिकता और उसमें निहित साम्प्रदायिक रंगों के यथार्थ को बखूबी उतारा है। लेखक ने एक बात विशेष रूप से कही है कि शासक वर्ग के द्वारा ये दंगे नियोजित होते रहे हैं। कुटिल राजनीति के प्रयोग के द्वारा सदियों से धर्मिक भावनाओं को भड़काकर शासक वर्ग अपना हित साधते हैं। अपने इस मूल्य और महत्त्व के कारण यह उपन्यास भविष्य की आशंकाओं के प्रति हमें जागरूक बनाता है। यह उपन्यास इस रूप में बहुत प्रासंगिक और उपादेय है। रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में ''तमस ऊपरी दृष्टि से एक विशेष कालखंड में राज्य विशेष में घटित साम्प्रदायिक दंगे की कहानी है, किन्तु वस्तुतः यह हमारे राष्ट्रीय कल्पवृक्ष की जड़ में अन्तर्निहित इस संकीर्ण साम्प्रदायिकता के विष की कहानी है जो आज भी हमारे लिए एक चुनौती बना हुआ है।''[1]

आजादी से पहले अंग्रेज हुकूमत थी जिससे छुटकारा पाने के लिए देश के कुछ लोग प्रयासरत थे। उपन्यास के प्रारंभ में प्रभात फेरी के लोग दिखाई देते हैं जिसमें गांधी टोपी पहने लोग थे और एक दो सरदार भी थे। उनके पास से गुजरने पर एक आदमी आवाज लगाता हुआ दिखाई देता है

''कौमी नारा !
बन्दे मातरम!
बोल भारत माता की जय!
महात्मा गांधी की जय!

कुछ ही दूरी पर एक और गली इस गली को काट गई थी, एक और नारा उठा–

''पाकिस्तान जिन्दाबाद!
पाकिस्तान जिन्दाबाद!
क़ायदे आजम–जिन्दाबाद!
क़ायदे आजम–जिन्दाबाद!''[2]

इस प्रकार उपन्यासकार ने उस राज्यखण्ड में व्याप्त इन दो स्वरों को स्पष्ट रूप से उभारा हैं। लेखक ने तत्कालीन शासकों की नीतियों के बीच देशभक्त, चिंतकों की चिंता को भी उभारा है। गान मंडली से एक दुबला–पतला सरदार जरनैल सिंह बोले जा रहा था ''गांधी जी का पफरमान है कि पाकिस्तान उनकी लाश पर बनेगा, मैं भी पाकिस्तान नहीं बनने दूंगा।''[3]

उपन्यास में मौलादाद, लक्ष्मी नारायण और हकीम जी की बातचीत में हकीम जी एक मुख्य प्रश्न उठाते हैं

''पर सबसे अहम सवाल हिन्दुस्तान की आजादी का है अंग्रेज से ताकत छीनने का है हिन्दू–मुसलमान का नहीं।''[4]

लेखक ने डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड और उसकी प्रबुद्ध पत्नी लीजा द्वारा ब्रिटिश शासकों की नीयत स्पष्ट की है। रिचर्ड अपनी पत्नी लीजा को कहता है

''डार्लिंग हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते प्रजा में कौन सी समानता पाई जाती हैं, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन–किन बातों में एक–दूसरे से अलग हैं?''[5]

यही रिचर्ड अपने पिटठू मुरादअली से एक सुअर को मरवाकर मस्जिद के पास डलवा देता है। मुरादअली यह काम हिन्दू पात्र नत्थू से करवाता है। इस प्रकार मस्जिद की सीढ़ियों पर मरा हुआ सुअर डलवा दिया जाता है। सुबह लोग देखते हैं

''सभी ने घूमकर उस ओर देखा, मस्जिद की सीढ़ी पर एक काले रंग का बोरा सा रखा नजर आया जिसमें दो टांगे बाहर को निकली हुई थी...
किसी ने शरारत की है। मेहता बुदबुदाया।''[6]

कांग्रेस कमेटी के लोग स्वच्छता के लिए सुबह सफाई के कार्य में जुट जाते है। मुरादअली मुसलमान है, सुअर को मारने का हुक्म नत्थू को इसलिए देता है कि आरोप उस पर आये और वह बच जाये। नत्थू को प्रलोभन दिया जाता है और साथ ही दबाव भी। वह इस काम को नहीं करना चाहता। नत्थू को घर की याद सताने लगती है। पत्नी की याद आयी। उसे मुरादअली ने सुअर को मारने को कहा था जिसे मजबूरन उसने किसी तरह निपटाया। पत्नी को स्मरण करते हुए सोचता है

''जाते ही उसे बाहों में भर लूंगा... उसकी छाती पर सिर रखूंगा तो चैन मिलेगा...घरवाली चुप रहने वाली औरत है, ढाढ़स बंधने वाली सुख पहुँचाने वाली...वह खुश हो जाएगी, कहेगी तुम क्यों लाए, मेरे पास सब कुछ है। वह कभी कुछ नहीं मांगती। उसे लगा जैसे दूर बैठे हुए भी वह उसे अपनी बाहों में लिए हुए है और उसके मन का सारा क्षोभ दूर होता जा रहा है। दुःख का छुटकारा पाने के लिए आदमी सबसे पहले औरत की तरफ ही मुड़ता है। औरत को बाहों में लेने पर उसके सभी क्लेश मिट जाएंगे...उसकी छातियों में प्यार भरा है।''[7]

नत्थू गरीब है, उसे पांच रुपये का प्रलोभन दिया जाता है इसलिए कुछ पत्नी के लिए खर्च कर पायेगा इस भाव से वह सुअर को मारने का प्रस्ताव स्वीकार करता है। उपन्यासकार ने गरीब लोगों की जिन्दगी के दाम्पत्य संबंधें को गहराई से चित्रित किया है।

अंग्रेज जानता है यह आरोप सीध हिन्दुओं पर आयेगा इसलिए सुअर मरवाकर डाला जाता है और अंग्रेज की यह नीति सफलता की ओर बढ़ती हुई दिखाई देती है। परिणामस्वरूप मुसलमान भी गाय काटते हैं और इस प्रकार दंगे भड़कने लगते हैं

''एक गाय भागती आ रही थी। उसके पीछे–पीछे एक आदमी सिर पर मुँडासा बांधे साथ में डंडा लिये गाय के पीछे–पीछे भागता हुआ, उसे हाँके लिये जा रहा था। उसकी छाती खुली थी और गले में ताबीज झूल रहा था।''[8]

उपन्यास में एक स्थान पर एक सिख सज्जन बोले

''सुना है एक गाय भी काटी गई है। माई सत्तो की धर्मशाला के बाहर उसके अंग फेंके गए हैं।''[9]

यह सब ब्रिटिश हुकूमत के इशारों पर होता है। रिचर्ड अपनी पत्नी से यह सब छिपाता है। लीजा जब शहर घूमने के लिए कहती है तो वह मना कर देता है

''कुछ दिन के लिए वहाँ नहीं जा पाएंगे, लीज़ा। आजकल शहर में थोड़ा तनाव पाया जाता है।''[10]

लीजा सवंदेनशील स्त्राी है। उसे दुःख होता है कि एक ही नस्ल के लोग आपस में क्यों लड़ते हैं।

कमिश्नर रिचर्ड़ अपनी पत्नी लीजा को कहता है

''लीजा यही बात तो लोग भूल जाते है...वे लोग जो आर्य कहलाते थे और हजार वर्ष पहले यहाँ पर आए और वे भी मुसलमान कहलाते थे और लगभग एक हजार वर्ष पहले यहाँ पर आए–एक ही नस्ल के लोग थे। सभी एक ही मूल जाति के लोग थे।'

'इन बातों को ये लोग भी जानते होंगे।'

'यहाँ के लोग कुछ नहीं जानते। ये वही कुछ जानते हैं जो हम इन्हें बताते हैं...ये लोग अपने इतिहास को भी जानते नहीं हैं ये केवल उसे जीते भर है।''[11]

रिचर्ड़ लीजा को समझाता है

''सभी हिन्दुस्तानी चिड़चिड़े मिज़ाज के होते हैं छोटे से उकसाव पर भड़क उठने वाले, धर्म के नाम पर खून करने वाले, सभी व्यक्तिवादी होते हैं।''[12]

प्रबु; लीजा रिचर्ड़ के संवाद से अर्थ निकाल लेती है

''लन्दन में तो तुम कहते थे कि ये लोग तुम्हारे खिलाफ लड़ रहे हैं।''

''हमारे खिलाफ भी लड़ रहे हैं और आपस में भी लड़ रहे हैं। ''कैसी बातें कर रहे हो? क्या तुम फिर मजाक करने लगे?'' ''धर्म के नाम पर आपस में लड़ते है, देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं। ''रिचर्ड़ ने मुस्काकर कहा।

''बहुत चालाक नहीं बनो, रिचर्ड, मैं सब जानती हूँ। देश के नाम पर लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं। और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो। क्यों ठीक है ना?''[13]

इसी कारण ''मुहल्लों के बीच लीकें खिंच गई थीं, हिन्दुओं के मुहल्ले में मुसलमान को जाने की अब हिम्मत नहीं थी और मुसलमानों के मुहल्ले में हिन्दू सिख अब नहीं आ जा सकते थे। आँखों में संशय और भय उतर आए थे।''[14]

साम्प्रदायिकता के इस जहर से आज भी हम मुक्त नहीं हो पाये हैं। साम्प्रदायिक संकीर्णता से उत्पन्न द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, हिंसा और क्रूरता का यह अंधेरा रह–रहकर भारत भूमि में लौट आता है जो हमारे सद्भाव, सौमनस्य और सहअस्तित्व को चोंट पहुंचाता है।

पूरे शहर में लूट, हत्या और आगजनी का तांडव होने लगता है। यह आगजनी गाँवों और कस्बों में भी पहुँच जाती है। ढोक इलाहीबख्श, खानपुर सैयदपुर आदि गाँवों भी लूटपाट और हत्याएँ होती हैं। सैयदपुर के गुरुद्वारे में गांव के सारे सिख एकत्रा होकर मोर्चाबन्दी करते हैं। मुसलमानों का मोर्चा शेख गुलाम रसुल के ऊँचे दो मंजिलें मकान में कायम होता है। सिख औरतें अपने बच्चों के साथ कुएँ में कूदकर आत्महत्याएं करती हैं। पाँचवें दिन अंग्रेज सरकार की ओर से नगर में कफ़र्यू लगाया जाता हैं। शांति होने के बाद का दृश्य बड़ा कारुणिक है, कुछ लोगों सम्पत्ति लूट ली गई, उनके घर जला दिये गये। उनके संबंधी मारे गये या फिर लापता हैं। अपनी ही आंखों के सामने परिवार के लोगों को कत्ल होते देखा हैं। अपनी बेटियों की इज्जत लूटते हुए देखी हैं। इन सब दृश्यों को भीष्म साहनी ने सजीव बना दिया है।

हिन्दू या मुसलमान सभी इस आंतक की प्रवृत्ति में धंसे हुए हैं। उपन्यास में पंडित जी कथा करने के बाद इस दहशत के बारे में हिन्दू लोगों को सावधन करते हैं कि किस तरह मुसलमानों के आक्रमण का सामना किया जायेगा। रणबीर एक हिन्दू पात्रा जब तेल उबालने के लिए कढ़ाई लेने जाता है तो हलवाई के सहज प्रश्न करने से पहले वह उसे चाकू मार देता है

''हलवाई कुछ कहे इसके पहले उसके दायें गाल पर खून की धर बह रही थी।''[15]

यही रणबीर मास्टर जी से हिंसा का पाठ पढ़ने लगता है। मास्टर जी उसकी मानसिक दृढ़ता को बढ़ाने के लिए उसे मुर्गी काटने के लिए कहते हैं। रणबीर के माथे पर पसीना आ जाता है और उसे मतली आने वाली होती है कि मास्टर जी चिल्लाते हैं

''रणबीर! उन्होंने चिल्लाकर कहा और एक सीध थप्पड़ उसके गाल पर दे मारा।''[16]

साधन सम्पन्न हिन्दू और मुस्लिम एक दूसरे के सहयोग के लिए आगे बढ़ते हैं। शाहनवाज जहां हिन्दू मित्र की सुरक्षा करता है वहीं उसके गरीब नौकर मिलखी को लात मारता है

''मिलखी की चुटिया पर नजर जाने के कारण, मस्जिद के आँगन के लोगों की भीड़ को देखकर या इस कारण कि जो कुछ वह पिछले तीन दिन से देखता–सुनता आया था वह विष की तरह उसके अन्दर घुलता रहा था। शाहनवाज ने सहसा ही बढ़कर मिलखी की पीठ में जोर से लात जमाई। मिलखी लुढ़कता हुआ गिरा और सीढ़ियों के मोड़ पर सीधा दीवार से जा टकराया।''[17]

बलदेव सिंह की माँ को तुर्कों ने मार दिया था तो बलदेव सिंह चिल्लता है

''खून का बदला खून से लेंगे।''[18]

वह गली के नुक्कड़ पर रहने वाले बूढ़े लुहार करीम बख्श के सीने में तलवार भोंक आता है।

उपन्यास में एक स्थान पर करीम खान हरनाम सिंह को कह जाता है कि बाहर वाले आ जाएंगे तो गाँव वाला कोई तेरी मदद को नहीं आएगा

''देर नहीं कर हरनामसिंह, हालत चंगी नहीं बाहरों बलवाइयाँ दे आण दा डर है।''[19]

वह दूर से देखता है उसकी दुकान का माल लूट लिया जाता है और दुकान को जला दिया जाता है।

हरनाम सिंह और उसकी धर्मपत्नी बन्तों एक मुस्लिम के घर में शरण लेते हैं जिसमें मर्द बाहर गये हुए हैं। वहां राजो मालकिन कहती है ''मेरा घरवाला और बेटा दोनों गाँववालों के साथ बाहर गए हुए हैं...आकर तुमसे कैसा सलूक करेंगे, मैं नहीं जानती।''[20]

यही राजो मालकिन इसी तरह से हरनाम सिंह और उसकी पत्नी को अपने घर शरण दे देती हैं लेकिन उनका लड़का रमजाना आता है तो गुस्से में कहता है ''निकलो ओ बाहर काफिरों, तुम्हारी.... ।''[21]

लेकिन पनाहगजीन को मारना ठीक नहीं है यह याद आते ही वह छोड़ देता है। राजो रमजाना की माँ उन दोनों को आधी रात में दूर तक छोड़ आती है। और लूटकर लाये हुए उनके ट्रंक में से दो कड़े बन्तो को दे देती है ताकि दुःख में वह काम आ सकें

''मजहबी जनून और नफरत के इस महौल में एक पतली सी लकीर कहीं पर अभी भी खिंची थी जिसे पार करना बहुत ही मुश्किल था।''[22]

उपन्यास में कहीं–कहीं अत्यंत मार्मिक प्रश्न है। इकबाल सिंह को इकबाल अहमद बनाने की घटना अत्यंत भयावह और पीड़ादायी है। इकबाल सिंह को मारा–पीटा जाता है और बाद में इस्लाम कबूल करवाने के लिए कहा जाता हैं। उसकी सुन्नत भी की जाती हैं।

''दिन ढलते–ढलते इकबाल अहमद की सुन्नत हुई। उसके लिए इस दर्द को बर्दाश्त करना बहुत कठिन नहीं रह गया था।''.....खाट पर पड़ा इकबाल अहमद रात भी छटपटाता रहा।''[23]

शिष्टमंडल के लोग डिप्टी कमिश्नर से जब दंगे–फंसाद रुकवाने के लिए कहते हैं तो रिचर्ड कहता है

''मैं डिप्टी कमिश्नर हूँ फौज का इन्तजाम तो मेरे हाथ में नहीं है। यहाँ पर छावनी तो है पर इसका यह मतलब नहीं कि फौज मेरे हुक्म से काम करती है।''

''छावनी भी ब्रिटिश सरकार की है और हुकूमत भी ब्रिटिश सरकार की है। बख्शी जी ने कहा

''अगर आप फौज बिठा देंगे तो मामला काबू में आ जाएगा?''

रिचर्ड ने फिर सिर हिला दिया ''फौज को मैं हुक्म नहीं दे सकता, यह तो आज भी जानते होंगे।''[24]

इस प्रकार यही रिचर्ड स्वयं दंगे करवाता है और जब अमन कमेटी के लोग कफ़र्यू लगवाने की बातें कहते हैं तो भी मना कर देता है ''इस छोटी सी बात को लेकर कफ़र्यू लगा देने से क्या शहर में घबराहट और ज्यादा नहीं फैलेगी?''[25]

इस प्रकार बहुत मुश्किल से बाद में शहर में शांति हो पाती हैं।

जब एक तरफ गली से 'अल्ला हो अकबर' की आवाज आती है तो दूसरी ओर से 'हर–हर महादेव' तो लीजा रिचर्ड से पूछती है

''ये लोग आपस में लड़े, क्या यह अच्छी बात है?'

इस पर रिचर्ड कहता है 'क्या यह अच्छी बात होगी कि ये लोग मिलकर मेरे खिलाफ लड़े, मेरा खून करें?''[26]

इस पर लीजा को लगता है

''मानवीय मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं होता, वास्तव में महत्त्व शासकीय मूल्यों का होता है''[27]

भीष्म साहनी का यह निष्कर्ष उनकी सूझ–बूझ का गहरा परिचय देता है। इस साम्प्रदायिक द्वेष की आग में कितने गरीब मर जाते है इस बात को व्यक्त करते हुए देवदत्त एक जगह कहता है

''पन्नों पर एक खाना और जोड़ दो। गरीब कितने मरे और खाते–पीते लोग कितने मरे।''[28]

वास्तव में इन दंगे में गरीब ही अधिक मारे जाते हैं इस सच्चाई का लेखक ने बड़ा ही सहज चित्रण किया है।

जहां लोग मिल–जुलकर साथ–साथ रहते थे वहां दंगों के बाद स्थिति बदल गयी

''शहर में फंसाद होने के बाद एक लहर सी चल पड़ी थी जिस इलाके में मुसलमानों की अक्सरियत थी वहाँ से हिन्दू–सिख निकलने लगे थे जिन इलाकों में हिन्दू–सिखों की अक्सरियत थी वहाँ से मुसलमान घर बार बेचकर निकल जाना चाहते थे।''

रिचर्ड जब दंगे फसाद खत्म हो जाते हैं तो लीजा को घुमाने के लिए कहता है–''अब स्थिति बदल गई है, अब तुम घूम–फिर सकती हो।''[30]

लीजा कहती है कि वहीं जगह जहाँ औरतें डूब मरी हैं और गाँव जले हैं तो रिचर्ड कहता है ''लीजा सिविल सर्विस हमें तटस्थ बना देती है हम यदि हर घटना के प्रति भावुक होने लगें तो प्रशासन एक दिन भी नहीं चल पाएगा।''

''यदि 103 गाँव जल जाएं तो भी नहीं?''

''तो भी नहीं।'' रिचर्ड ने तनिक रुककर कहां, ''यह मेरा देश नहीं है। न ही ये मेरे देश के लोग है।''[31]

वैचारिक धरातल पर जब हम उपन्यास में से गुजरते हैं तो कुछ निष्कर्ष बड़े सामजिक महत्त्व के पाते हैं। 'तमस' में जो कालखंड है वह इतिहास की वस्तु बन गया है लेकिन उस समय से आज के समय तक जो प्रवृत्तियाँ उभरती हैं उनमें काफी समानताएं है– जैसे दंगों में गरीब अर्थात् साधनहीन ही सबसे अधिक दुःख भोगता है और शक्ति, बाहुबल, संख्याबल, साधन; सुरक्षा के अन्य उपायद्ध ही जीवन की सुरक्षा कर पाते हैं। साधनवान लोग ;चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय के होंद्ध परस्पर एक दूसरे का हित साधते हैं लेकिन गरीब का कोई नहीं होता। स्त्री और बच्चों को इन दंगों में सबसे अधिक निशाना बनाया जाता है और वृद्ध लोगों के प्रति कोई दया भाव पाशविक वृत्ति वाले लोगों में नहीं होता। भीड़ के सामने और आंतकियों के सामने सज्जन वृत्ति के लोगों का साहस कमजोर पड़ जाता है। आधुनिक शिक्षा और जीवन पद्धति में रहने वाले अधिकतर आत्मकेन्द्रित होते हैं अपनी सुरक्षा के अतिरिक्त दूसरे के बचाव के प्रयत्न में हिस्सेदारी कम रखते हैं। किसी धर्म का भगवान, अल्लाह, वाहे गुरु कोई भी उतकर नहीं आता और असहाय गरीब, स्त्राी–पुरुष, बच्चे–वृद्ध मारे जाते हैं। हालांकि मनुष्य की जिजीविषा बड़ी चीज है जो विपत्तियों में भी रास्ता खोजने में लगी रहती है। लेखक ने मनुष्य और उसकी मानवीयता को बचाये रखना बहुत जरूरी समझा है।

सन्दर्भ ग्रर्थ

1. तमसःभीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. आठवीं आवृत्ति 2011।
2. तमसःभीष्म साहनी पृष्ठ 4।
3. वही पृष्ठ 20।
4. वही पृष्ठ 21।
5. वही पृष्ठ 50।
6. वही पृष्ठ 28।
7. वही पृष्ठ 35।
8. वही पृष्ठ 57।
9. वही पृष्ठ 37।
10. वही पृष्ठ 39।
11. वही पृष्ठ 25।
12. वही पृष्ठ 24।
13. वही पृष्ठ 27।
14. वही पृष्ठ 27।
15. वही पृष्ठ 73।
16. वही पृष्ठ 45।
17. वही पृष्ठ 42।
18. वही पृष्ठ 80।
19. वही पृष्ठ 108।
20. वही पृष्ठ 95।
21. वही पृष्ठ 111।
22. वही पृष्ठ 116।
23. वही पृष्ठ 116।
24. वही पृष्ठ 122।
25. वही पृष्ठ 47।
26. वही पृष्ठ 48।
27. वही पृष्ठ 67।
28. वही पृष्ठ 67।
29. वही पृष्ठ 134।
30. वही पृष्ठ 136।
31. वही पृष्ठ 131।
32. वही पृष्ठ 131।